13 / 01 / 78 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

कल्याणकारी, महादानी, वरदानी

स्थिति का अनुभव

➢➢ मैं विश्व सेवाधारी आत्मा हूँ...

➳_ ➳ ज्ञानी तू आत्मा हूँ...

➳_ ➳ योगी तू आत्मा हूँ...

➳_ ➳ दिव्य गुणधारी आत्मा हूँ...

➳_ ➳ सर्व श्रेष्ठ गायन और पूजन योग्य आत्मा हूँ...

➳_ ➳ बापदादा की स्नेही हूँ...

➳_ ➳ सहयोगी हूँ...

→ मैं महान आत्मा हूँ...

→ हर कर्म स्वमान में स्थित होकर कर रही हूँ...

- मैं बाबा के नयनों की नूर हूँ..
- नूरे रत्न हूँ..
  - कितना श्रेष्ठ भाग्य है मेरा...

➢➢ मैं डायरेक्ट बाप का बच्चा हूँ...

➳_ ➳ वाह मेरा भाग्य...

➳_ ➳ मुझे भगवान ही मिल गये...

➳_ ➳ उसका अनुभव कर लिया...

➳_ ➳ मैं अनुभवी मूर्त आत्मा हूँ..

→ सर्व प्राप्ति कराने वाली आत्मा हूँ...

→ मैं दाता की सन्तान हूँ...

- हर संकल्प
- बोल से खजाने दे रही हूँ...
- समय, गुण, खजाने बाँट रही हूँ...
  - मैं महादानी हूँ...
  - वरदानी मूर्त हूँ..
  - मैं अपना समय, गुण, शिक्याँ विश्व की सेवा अर्थ समर्पित कर रही हूँ...
  - सेवा प्रति समर्पण होने से सहज ही संपन्न बन रही हूँ...

➢➢ मैं सेवाधारी आत्मा हूँ...

➳_ ➳ समय और खजाने स्व प्रति न लगाकर सेवा प्रति लगा रही हूँ...

➳_ ➳ सेवा की लगन में सभी पेपर स्वत ही समर्पित हो रहे हैं...

→ मैं आत्मा मायाजीत बन रही हूँ...

→ मैं साक्षात्कार मूर्त हूँ..

- भक्त आत्माओं को...
- भिखारी आत्माओं को...
- प्यासी आत्माओं को...
- बाबा का साक्षात्कार करा रही हूँ...
- भक्तों को बाबा मिलन का मार्ग बता रही हूँ...
  - मैं रहमदिल आत्मा हूँ...
  - महादानी बन पुन्य आत्मा का पार्ट बजा रही हूँ...
  - मैं बाबा का फरमान बरदार बच्चा हूँ...
  - सेवाधारी आत्मा हूँ...
  - महादानी और वरदानी मूर्त हूँ..